P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-III* Issue-XII*August-2016

समकालीन कविता का स्वरूप

रेनू जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रानीखेत, अल्मोड़ा

सारांश

अपने समय की पहचान और समय के भीतर ही कविता को तलाशना समकालीन कविताओं की विशेषता है। आज लोगों के जीवन में इतनी जटिलतायें आ गयी है, जिसके कई खतरनाक परिणाम समाने आ रहे हैं, और जीवन की व्यवहारिक सच्चाई को सब अपनी खुली ऑखों से देखते है। ऐसे जटिल वातावरण में जब कई प्रश्नों ने व्यक्ति के जीवन को घेरा हैं। आदमी का कल्पना की दुनिया मे प्रवेश करना कठिन हो गया है, तो इन सब परिस्थितियों के बीच समकालीन कवियों के व्यक्तित्व की चीख सुनाई पड़ना स्वभाविक है। यह कविता संघर्ष करते आदमी की शक्ल है। उसका कथ्य व्यापक स्तर पर मानवीयता से जुड़ता है उसमें घरेलूपन है। वह परिवार से कटी हुई कविता न होकर जीवन का सही यथार्थ है। वह आदमी को पहचानने के लिये जीवन की जड़ों तक जाती है, और उसका तटस्थ टृष्टि से सही–सही मूल्यांकन करती है। समकालीन कवियों ने अपने समय की विभक्त धाराओं को पहचान कर अपना रास्ता चुना । और वें निम्न–मध्यवर्गीय जनों के जीवन से सम्बद्ध हो गये। इसी प्रतिबद्धता ने उनके आत्म–संघर्ष को आत्म विस्तार दिया। यही कारण है, कि समकालीन कवियों को उनमें अपने समय की ही नही, अपितु भविष्य की भी आवाजें सुनाई देती हैं।

मुख्य शब्द : समकालीन, इन्द्वात्मकता, यथार्थवाद, निम्नमध्यवर्ग, प्रतिबद्धता, संघर्ष, अन्तर्विरोध, शोषित।

प्रस्तावना

काव्य सृजन एक वर्द्धनशील कला है, विचार और नवीन स्फुरणाओं का प्रवेश रोका नही जा सकता, परन्तु देशकाल और पात्र के अनुरूप प्रत्येक वस्तु के मूल्याकंन का मानदण्ड बदलता रहता है, परिस्थितियों के बदलाव और परिवर्तनों के साथ ही मूल्य और प्रतिमान भी बदलने लगते है, मुक्तिबोध के अनुसार कोई भी नया साहित्यिक आन्दोलन उन विशेष कालगत स्थितियों मे पैदा होता है, जिन्हें हम सामाजिक विकास की महत्वपूर्ण श्रृंखला कहते है ।''[1]

आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास मे स्वतन्त्रता के बाद की कविता को समकालीन कविता के नाम से जाना जाता है, आरम्भ मे यह एक विशेष काव्यान्दोलन का सूचक था, जिसमें अपने काल विशेष मे होने वाली घटनाओं के खुलासे की प्रवृत्ति निहित थी । समकालीन कविता ऐसी कविता है, जो अपने समय के साथ चलती है अपने समय के साथ होती है, अपने समय के साथ जीती है, यह कविता अपने समय की विंसगति विडम्बना और तनाव से जुड़े सवालों से टकराती एक विशेष रूप और गुणधर्म वाली कविता है। इसकी आधार भूमि मुख्य रूप से युग परिवेश और उसके जीवन के साथ जुडे हुए विवशतापूर्ण सवाल है ।

स्वतन्त्रता के बाद से ही प्रत्येक जागरूक नागरिक की चेतना को झिझोंड़ने वाले ऐसे ही सवाल समकालीन कविता के मूलभूत सरोकारों का निर्धारण करते है। चाहे वह देश में आपातकाल लागू होने की घटना रही हो, या साम्प्रदायिक विद्वेष दंगे फसाद और आंतकवाद का लगातार फैलाव रहा हो चाहे किसानों की आत्महत्यायें रही हो, या उदारीकरण के नाम लगातार देश में विदेशी कम्पनियों के हस्तक्षेप का बढ़ना रहा हो, बड़ी राजनैतिक पार्टियो का टूटना, क्षेत्रीय राजनीति का राष्ट्रीय राजनीति पर हावी होना, चुनाव सुधार के बावजूद चुनावों का लोकतन्त्र के नाम पर मखौल होना, राजनीति और अपराध का गठबन्धन होना, मीडिया और सत्ता का माफियाकरण होना, परमाणु शक्ति सम्पन्न होने के बावजूद भारत का एक भयभीत राष्ट्र बने रहना आदि घटनाओं ने समकालीन कविता के युगधर्म का निर्धारण किया है साथ ही समकालीन कविता ने अमर होने की चिन्ता न करते हुए अपने समकाल की सारी घटनाओं को चित्रित किया है ।

भारतीय समाज की इन तमाम घटनाओं का युवा वर्ग पर गहरा प्रभाव पडा है, इस भयावह यथार्य के बोध से युवा वर्ग में व्यापक असन्तोष निराशा आक्रोशजन्य विरोध आदि प्रवृत्तियॉ जागी। सामान्य जनता तो परिवेश की इन

यातनाओ की भोगती रही, परन्तु संवेदनशील बुद्धिजीवी वर्ग ने इनसे बचने तथा बचाने के लिए आवश्यक जागृति पैदा करने का बीडा उठाया, परन्तु उसको व्यक्त करने का रास्ता अत्यन्त कठिन रहा, फिर भी मोहभंग से उत्पन्न परिणामों का विश्लेषण करके उसके लिये जिम्मेदार कारण और व्यक्तियों की तलाश करके उनकी पुनारावृत्ति से राष्ट्र को बचाने की कोशिशे इसी बुद्धिजीवी वर्ग या कवि वर्ग ने की है ।

स्वतन्त्रता के दो दशक बाद भी देश पर गहराते आर्थिक व राजनीतिक संकट ने युवा कवियो को विक्षोभ से भर दिया, उन्होंने भयावह आर्थिक विषमता और सामाजिक पिछड़ेपन के वर्तमान मे पूंजीवादी षडयंत्रो को दिन प्रतिदिन बढते हुए देखा । इसलिये प्रतिबद्ध कविता अन्याय और अत्याचारो के विरोध मे खड़ी होती है वह समाज की प्रगतिशील शक्तियों के संघर्ष से स्वंय को जोड़ने के लिये प्रतिबद्ध है । यही कारण है कि उसने अपने चारो ओर फंसे निम्न और शोषित वर्ग के जीवन की समस्याओं को काव्य का विषय बनाया।

''जड़ के अपने इतिहास में
अधेरे को लपेटने की कोशिश है
एक नन्हीं बच्ची
जो पटरी पर नजर गडायें चली जाती है
इन बच्चों की जड़े जले हुये कोयलो में है
बिखरी गिट्टियों में, और लोहे के पत्थरों में''[2]

मनुष्य के संघर्ष की स्थिति को यह कविता उजागर करती है, और यथास्थितिवाद का विरोध करती है, समकालीन कविता मानवीय जीवन की समस्याओं को केन्द्र में रखती है, उसने शक्ति के संगठन मे विश्वास पैदा किया है। अपने समय की आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक समस्याओं के बारे में समकालीन कवि खामोश न रहकर खुलकर संघर्षरत रहा है। अज्ञेय के अनुसार ''कविता पहले रचनाकार के भीतर मानवीय होने की प्रकिया मे घटित होती है।''[3]

समकालीन कविता धीरे–धीरे इन संकटो से मुक्त होती जा रही थी। पहले जहॉ प्रतिबद्धता को बामंपथी विचारधारा से जोड़कर केवल एक पक्ष पर ही अधिक जोर दिया जा रहा था, वहॉ पर अब अनुभवों के विस्तार ने उसे व्यापक सन्दर्भो से जोड़ दिया है। इसलिये अब आठवें दशक के कवियों की प्रतिबद्धता किसी राजनीतिक बयान में नहीं, अपितु जनसामान्य के संघर्षपूर्ण जीवन के आत्मीय और ठोस जीवन संदर्भो से प्रतिबद्ध है क्योकि विचारधारा का आंतक धीरे–धीरे समाप्त हो गया हैं, और कविता भी सामान्य आदमी से जुडकर अन्याय के पक्ष मे खडी है, यह बदलाव किसी आन्दोलन से नहीं, अपितु यह परिवर्तन घर, समाज, परिवार के संघर्ष से जुड़े अनुभवों से है। कविता का जो स्वरूप आज उभरकर आया है, उसमें राजनीति धारणा न होकर एक अनुभव के रूप में है। रघुवीर सहाय कहते है कि –''सबसे मुश्किल और एक ही रास्ता है, कि मैं सब सेनाओं से लडू किसी में ढाल सहित, किसी में निष्कवच–मगर अपने को अन्त में मरने सिर्फ अपने ही मोर्चे पर दूॅ। अपने भाषा के, शिल्प के और उस दोतरफा जिम्मेवारी के मोर्चे पर जिसे साहित्य कहते है''[4]। समकालीन कविता में कवियों का राजनीति से जो रिश्ता बना है, उसका कारण है, कि राजनीति मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती है । इसलिये इस कविता मे अपने समय की पहचान है, वह कल्पना नहीं, अपितु आज के संघर्ष करते आदमी की सच्ची तस्वीर पेश करती है।

डॉ0 विश्म्भरनाथ उपाध्याय के अनुसार – ''समकालीन कविता में जो हो रहा है, उसका सीधा खुलासा है, इसे पढकर वर्तमान काल का बोध हो सकता है क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, बौखलाते, तड़पते–गरजते तथा ठोकर खाकर सोचते वास्तविक आदमी क परिदृश्य है।[5] आज की कविता में काल, अपने गत्यात्मक रूप में है। ठहरे हुए क्षण अथवा क्षणांश के रूप में नहीं। यह 'कालक्षण' नहीं कालप्रवाह की, आघात और विस्फोट की कविता है''

समकालीन कविता मे प्राथमिक आवश्यकताओं को पहचान कर लड़ने का संकल्प, तथा दैनिक आवश्यकताओं के ज्ञान की शक्ति है। यह कविता अपने समय के अन्तर्विरोधों की कविता है, यह कविता घर, परिवार, समाज से जुड़कर अपने वृहत्तर सन्दर्भों की पकड़ती है। स्त्री, मॉ, बच्चा, बेटी, घर–परिवार के प्रसंग उसे और भी मानवीयता प्रदान करते हैं। भगवत रावत की कविता कुछ ऐसे ही प्रसंग को प्रस्तुत करती है। –

''एल्मुनियम का यह दो डिब्बों वाला कटोरदान
बच्चे के हाथ से छूट कर
नहीं गिरा होता सड़क पर
तो यह कैसे पता चलता
कि उसमें चार रूखी रोटियों के साथ
प्याज की एक गॉठ
और दो हरी मिरचें भी थे।''[6]

इसी प्रकार संघर्ष करते आदमी, औरतें, अबोध बच्चे भी समकालीन कविता मे दिखाई देते है। रधुवीर सहाय, चन्द्रकान्त देवताले, विष्णु खरे, राजेश जोशी, मंगलेश डबराल, उदयप्रकाश, सोमदत्त, केदारनाथ सिंह आदि की कविताओं में स्त्री व बच्चों की मानवीय उपस्थिति है।

आज स्वार्थो की राजनीति संस्थाओं में ही नहीं, व्यक्ति की चहारदीवारी के भीतर भी प्रवेश कर गई है। मानवीय प्रेम की पवित्र सूक्तियॉ आज नष्ट हो गई है, इसलिये समकालीन कविता इन सभी स्थितियों के विरोध में प्रश्न–चिन्ह खड़े करती है।

''वह कौन सी चीज है
बाहर की देह से दूर
हवा और सौर मण्डल की
आदमी से बाहर पर दीवारों के अहाते मे घुसी हुई घर की
देह पर मौजूद तमाम निशानात में,
और आदमी के भीतर की सभी मंजिलों और सभी खानों में
पाव की बिवाइयों से लेकर
अमाशय और मस्तिष्क के परतों के भीतर तक
सोचने समझने की खिड़की और आत्मा के सभी तहखानों में
न्यायाधीशों के शब्द और बजट के दस्तावेजों से लेकर
थाली की रोटी और तन को ढ़कते कपड़ा के बीच
वह कौन सी चीज है जो
जो आदमी को आदमी नही रहने देती''[7]

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में इतनी जटिलतायें आ गई है, जिसके खतरनाक परिणाम सामने आये है ऐसे

वातावरण मे जब कई प्रश्नो ने व्यक्ति के जीवन को घेरा है, मनुष्य का कल्पना की दुनिया में प्रवेश करना कठिन हो गया है । प्रसिद्व विचारक तारिक अली ने हमारे समय के वर्तमान को स्पष्ट करते हुए कहा है

''बहुत से ऐसे अनुतप्त आदर्शवादी है, जिनका मोहभंग हो चुका है। ये लोग जब ऐसे लोगो से टकराते है जो गंदी राजनीति पर सवार है , जिनकी आवाज ऊँची है और जिनके पास समर्थकों का एक दल है और 'सब चलता है' का दर्शन है, तब ये आदर्शवादी पिटकर एक किनारे फेंक दिये जाते है। इन आदर्शवादियों का दम घुटता है क्योंकि इन्हें अपने चारों ओर भ्रष्टाचार दिखाई देता है, न केवल पैसे का बल्कि हर प्रकार की क्षमता का दुरूप्रयोग मसलन, रेलवे क्रासिंग का वह गेटकीपर जो अपना व्यक्तिगत कर वसूलता है, अस्पताल का स्टोरकीपर जो अपने दोस्तों को कीमती दवाएं बॉटता है, या म्युनिसिपल इन्स्पेक्टर जो दुकानदारों को ऊपरी आमदनी का स्रोत समझता है, या कलकत्ता का वह पुलिस वाला जो हर मंगलवार को पांच रूपया प्रति लारी और दो रूपया प्रति टैक्सी वसूलता है, और न मिलने पर ड्राइवर का चालान कर देता है।''[8]

समकालीन कविता मे जीवन का यथार्थ है, वह आदमी को पहचानने के लिये जीवन की जड़ो तक जाती है, और उसका तटस्थ दृष्टि से सही–सही मूल्यांकन करती है, जॉच–पडताल करती है,और बेकसूर शोषित, उत्पीड़ित आदमी के चित्र प्रस्तुत करती है, इतना ही नहीं वह षड़यन्त्रकारी साजिशों की बर्बरता और नृशंस अत्याचार के विरूद्ध खड़ी होती है। लीलाधर जगूड़ी की 'बलदेव खटिक',चन्द्रकांत देवताले की ''भूखण्ड तप रहा है '',धूमिल की 'मोचीराम', कुमारेन्द्र सिंह की 'भंगी कालोनी', 'गोबरधन' आदि अनेक कविताओं में निम्न वर्ग और निम्न–मध्यवर्ग के शोषित, विवश एंव संवेदनशील व्यक्तियों को काव्य का नायक बनाकर उनके माध्यम से युग के यथार्थ का चित्रण किया है। 'धूमिल' की कविता 'कल सुनना मुझे' में आम आदमी का ही संसार रचा गया है

''मैं समुद्र से बहुत दूर/ आदमियों के उस भूखंड पर जिंदा हूँ/ जहाँ लोगों ने समुद्र का चिघाड़ना नहीं जाना/समुद्र के फेन में दांत की तरह टूटते हुए घर/बहते ढोर–ढंगर और स्त्री–पुरूषो की देहो का/हाहाकार किसी से नहीं देखा/ पत्थरों को तोड़ते हुए आदमी/और कोयला बीनती हुई औरतों/और नंगे पैर ठिठुरते हुए बच्चे/मुझे इस पठार पर /अपने मौजुदा मुकद्दर के खिलाफ/हर रोज कुछ दे रहे है।''[9]

समकालीन कवि भी जनशक्ति में अटूट आस्था रखता हैं वह जानता है कि खामोशी ही षड्यन्त्र को सफल बनाती है।

''खामोशी में छेद करना जरूरी है / इसलिये मैं अंधेरे में जाती हुई/पिन को फुरसत नहीं दे सकता''[10]

समकालीन कविता वस्तुतः मानवीय अन्तर्सम्बन्धों, चीजों और समूची व्यवस्था के संवेदनहीन हो जाने की त्रासदी है और यह व्यवस्था मनुष्य को इर्धन की तरह इस्तेमाल कर रही है। इसी व्यवस्था का यह कविता विरोध करती है। समकालीन कविता की भाषा भी आम आदमी के संसार को अभिव्यक्त करती है। इसमें विचारों को अपने परिवेश की छोटी–छोटी गतिविधियों और घटनाओं से तथा इस परिवेश में संघर्ष करते औसत दर्जे के मनुष्य की गतिविधियों को चरितार्थ किया गया है। अशोक वाजपेयी कहते हैं कि ''यह नई वस्तुपरकता है। उसमें अतिरंजना, और नाटकीयता का अभाव है, और कल्पनाशील साहस अन्तर्निहित है – दुनिया का अपना, अपनी स्थिति का वस्तुपरक बखान करने का साहस। इसी को दूसरे शब्दों मे कहा जा सकता है कि जहाँ पिछले दशक की कविता का भाषाई अनुभव 'महसूस करने' और 'सोचने' के अतिवादी खानों मे बंटा हुआ था। लेकिन आठवें दशक में दोनों तत्व मानवीय ऊष्मा में घुल–मिल गये है।[11]

समकालीन कवि की भाषा में विडम्बना का जो स्वरूप देखने को मिलता है, वह ऊपर से सामान्य दिखता है लेकिन वह अनुभव के इकहरेपन से उठकर जीवन की जटिल इन्द्रात्मकता मे जाता है। प्रभात कुमार त्रिपाठी कहते हैं – ''यह हमारे बहुत करीब की चीजों को हमारे मन मे खिलायें रखने वाली कविता है।''[12] इस कविता के भाषा–शिल्प में व्यवस्था विरोध में, शोषितों के विरोध मे व्यग्यों की भरमार है। कवि की चेतना परिवेश के साथ द्वन्द्व रूप में सम्बद्ध होती है। इसमें क्रोध से लेकर करूणा तक के व्यग्यों का स्वर है। रघुवीर सहाय की भाषा मे जो व्यग्य मिलता है उसमें करूणा का भाव अधिक मिलता है।

''सेना का नाम सुन देश–प्रेम के मारे / मेजें बजाते हैं/ सभासद भद्–भद्–भद् कोई नही हो सकती/ राष्ट्र की/ संसद एक मंदिर है जहाँ किसी को द्रोही कहा नहीं/ जा सकता /दूध पिये मुंह पोछे आ बैठे जीवनदानी गोंद दानी सदस्य तोंद सम्मुख घर/बोले कविता में देश प्रेम लाना/ आईस्क्रीम प्रेम लाना है।''[13]

कविता में व्यग्य–दृष्टि ही कवि को भावुक होने से बचाती है, और भयावहता को सम्मुख रखती है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समकालीन कविता अपने समय के साथ सामंजस्य अथवा द्वन्द् की कविता है। अन्याय के विरूद्ध लडने का संकल्प और जीवनानुभवों को पहचानने की दृष्टि समकालीन कवियों को विरासत में प्राप्त है।

उद्देश्य

समकालीन कविता आम आदमी के जीवन को उसकी जड़ों को समझने का प्रयन्त है इसलिये मानवीय अनुभवों की तरह ही इन कविताओं का रचना–संसार भी व्यापक है। जो मनुष्य के सुख–दुख से प्रतिबद्ध है। समकालीन कवियों की काव्य धारणायें त्रिभुज के सिद्वान्त पर आधारित है, जिसकी एक भुजा बाहय जगत,दूसरी भुजा आन्तरिक जीवन, और तीसरी भुजा आधार–भुजा है इस प्रकार आन्तरिक जीवन और बाहय जगत का सामन्जस्य और द्वन्द्व ही समकालीन कवियों की कविता है ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में समकालीन कविता पर विचार किया जाय, तो हम देखते है, कि इन कविताओं में अनुभव की द्वन्द्वात्मकता ही उभरकर सामने आयी है । क्योंकि समकालीन कविता निम्न वर्ग की समस्याओं और विडम्बनाओं की यथार्थवादी दुनिया को ही प्रस्तुत करती है। इन कविताओं में शोषित और उत्पीड़ितों के प्रति गहरी आन्तरिक सहानुभूति प्रकट हुई है। समकालीन जीवन के

अन्तरविर्रोधों, तनाव, आंतक भय तथा चिंता के वातारण को भी इन कविताओं में चित्रित किया गया है। यही कारण है कि समकालीन कवि ने निम्न–मध्य–वर्ग के संधर्ष को जीवन के हर कोंण से देखा है। इसलिये समकालीन कविता में युग–बोध और यथार्थ दोनों का समन्वय मिलता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुक्तिबोध रचनावलि –भाग 5 पृष्ठ संख्या 318
2. अबेकस – ऋतुराज, पृष्ठ संख्या–33
3. आवेग–चन्द्रकान्त देवताले, पृष्ठ संख्या –9
4. 'आत्महत्या के विरूद्ध' की भूमिका से – रघुवीर सहाय
5. समकालीन कविता की भूमिका–सं0 विशम्भरनाथ उपाध्याय – पृष्ठ संख्या–3
6. समुद्र के बारे में – भगवत रावत –पृष्ठ संख्या 8
7. भूखण्ड तप रहा है – डा0 चन्द्रकान्त देवताले, – पृष्ठ संख्या–48
8. समकालीन कविता की भूमिका – डॉ0 विशम्भरनाथ उपाध्याय – पृष्ठ संख्या–19
9. लकड़बग्धा हंस रहा है –डा0 चन्द्रकांत देवताले – पृष्ठ संख्या–30
10. दीवारों पर खून से – डॉ0 चन्द्रकान्त देवताले
11. फिलहाल – अशोक वाजपेयी – पृष्ठ संख्या –67
12. आलोचना – पृष्ठ संख्या –125
13. आत्महत्या के विरूद्व – रधुवीर सहाय